10

भारतीय ज्ञान परंपरा का संवहन करती 'वीणा 1'

शारदा कुमारी*

भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान का वह सूर्य है, जो विभिन्न विषय रूपी रश्मियों के माध्यम से समस्त समाज को आलोकित करता है। यह एक निर्मल, निश्चल, पवित्र निर्झरणी है, जिसमें देश के सहस्त्र नागरिकों की आस्था, मूल्य, आदर्श, दर्शन, संस्कृति सभ्यता, कर्म सभी जीवत भावनाएँ समाहित हैं। यह परंपरा किसी एक तत्व या मूल्य को लेकर नहीं चलती, वरन यह तो एक व्यापक विराट संचेतना है जिसने अपने अंतस में भारत के कण-कण में समाहित ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे संवहित किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा सूर्य की सहस्त्रों किरणों के समान अनंत प्रकाश वाली है। इसके ज्ञान की समस्त धाराएँ यदि औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की शिक्षण अधिगम सामग्री विशेषकर पाठ्यपुस्तकों की सामग्री को सुवासित करें, तो समस्त विद्यार्थी शक्ति को नवीन चेतना, जागरूकता और सजगता की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध होंगी। प्रस्तुत लेख राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा सृजित एवं प्रकाशित कक्षा 3 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में समाहित भारतीय ज्ञान परंपरा की सोदाहरण विवेचना प्रस्तुत करता है।

हमारा देश भारत, एशिया महाद्वीप एवं संपूर्ण विश्व का एक विशाल भू-भाग युक्त प्रदेश है। यह संस्कृति एवं ज्ञान की दृष्टि से विश्व की प्राचीनतम सभ्यता वाला देश है। लिखित व मौखिक दोनों ही स्वरूपों में यह ज्ञान का आदि स्रोत है। भारत आध्यात्म, उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट ज्ञान परंपराओं की भूमि है। इस ज्ञान परंपरा में सामान्य जीवन से जुड़े पहलू, खगोल, भूगोल, रसायन, आयुर्वेद, स्थापत्य, वास्तु, ज्योतिष, खेल-कूद, मनोरंजन, कला, विज्ञान सभी समावेशित हैं। हमारा देश भारत प्राकृतिक वैविध्यों, माटी की गंधों, नाना प्रकार की वनस्पतियों, खनिजों एवं तरह-तरह की विविधताओं से भरा देश है। इन विविधताओं ने ही यहाँ के निवासियों के जीवन के विविध रूपों — भाषा, आचार-विचारों, खान-पान, रहन-सहन, उत्सव-त्योहारों, मान्यताओं आदि में भी विविधता को साकार किया है। इस प्रकार के वैविध्य हमें अपने चारों ओर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं। नदियों, पहाड़ों, वनों, वनस्पतियों तथा अन्य प्राकृतिक उपादानों ने भी इन विविधतापूर्ण रूपों को बनाने-निखारने में प्रत्यक्ष एवं महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

**प्राचार्य* (अवकाश प्राप्त), मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम, नई दिल्ली 110 066

स्पष्ट है कि विविधता और विभिन्नता सर्वत्र परिव्याप्त है, फिर भी सारा देश अनादिकाल से, अलक्षित रूप से परस्पर सुसंबद्ध-सा है। यहाँ दसों दिशाओं में विघमान पवित्र स्थल सभी के साँझे हैं। अनेकता में एकता, भेद में अभेद अर्थात समग्रतावादी-दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है और यह विशेषता भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्रोत है, जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा सृजित व प्रकाशित कक्षा तीन की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में बहुआयामी रंगतों के साथ अवगुंठित हुई है।

सर्वप्रथम 'परिवेशीय सजगता' का अवलोकन करते हैं। समस्त प्राणी जगत का जीवन प्राकृतिक संसाधनों पर पूरी तरह से आश्रित है। इसीलिए हमारी परंपराओं ने जल के स्रोतों तथा विविध प्रकार की वनस्पतियों को पूज्य माना और अपनी दिनचर्या में समाहित किया। पीपल, तुलसी, बरगद आदि पेड़-पौधों को जल अर्पित करके स्वयं आहार ग्रहण करना यह परंपरा इस बात की द्योतक है कि वनस्पतियों का सरंक्षण हमारा सर्वोपरि धर्म है। अपने आस-पास के पेड़-पौधों की पहचान, उनके गुणों की जानकारी एवं समझ, उनका संरक्षण यह भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में है। 'वीणा 1' में परिवेशीय सजगता को पाठ्य सामग्री और गतिविधियों के माध्यम से उकेरा है।

उदाहरण के लिए, 'वीणा 1' की 'इकाई एक — हमारा पर्यावरण' के अंतर्गत पाँचवा पाठ 'आम का पेड़' जहाँ एक ओर विद्यार्थियों को कहानी विधा से परिचित कराता है, तो दूसरी ओर बहुत ही सरलता से पेड़-पौधों के उगने की प्रकिया से भी परिचित करवाता है। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और औद्योगीकरण के द्रुतगामी विकास के बावजूद भी कृषि पर अर्थव्यवस्था की निर्भरता है। भारत के पास कृषि, उद्यान, उपवन का अपना एक विशिष्ट ज्ञान है, यह पाठ बच्चों का ध्यान इस ओर बहुत मनोरंजक रूप से आकर्षित करता है। पुस्तक के पृष्ठ 41 की गतिविधि पर ध्यान दें —

'मेरे विद्यालय में पेड़-पौधे'

(क) 'आपके विद्यालय में कौन-कौन से पेड़-पौधों लगे हैं? पता लगाइए और उनकी सूची बनाइए।' जैसा कि पहले इंगित किया जा चुका है कि भारतीय ज्ञान परंपरा अपने आस-पास की वनस्पतियों को जानने पहचानने और उसकी देखभाल करने की संस्कृति को अपनाने पर प्रोत्साहित करती है, प्रस्तुत गतिविधि इस अनुशंसा का निर्वाह करती है।

इस गतिविधि का उद्देश्य सार्थक हो सके इसके लिए अध्यापक मौसम की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर विद्यालय परिसर और विद्यालय के आस-पास 'प्रकृति भ्रमण' का आयोजन करवा सकते हैं और एक-दूसरे के अनुभवों से पेड़-पौधों से परिचय व मित्रता का भाव बढ़ा सकते है।

पृष्ठ संख्या 108 पर "पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'" संदेश देती है कि प्रकृति और प्राणी जगत पारस्परिक रूप से निर्भर हैं और बिना किसी आदेश या अनुदान की प्रतीक्षा किए बिना स्वतः के प्रयासों से प्राकृतिक सौंदर्य बनाए रखना है। तिमक्का का चरित्र भारतीय ज्ञान परंपरा की उस निर्मल धारा का संवहन करता है जहाँ न तो लोभ है और न स्वार्थ है। बस एक जिजीविशा है, अदम्य साहस है, अपने बलबूते पर

मानव एवं अन्य प्राणी जगत के योगक्षेम को बनाए रखने का। विद्यार्थी निश्चित रूप से पेड़ों की अम्मा के चरित्र को अपने व्यक्तित्व में उतारकर लाने की चाहत पैदा करेंगे।

भावनात्मक एकता भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अन्य रस वाहिनी है। इसका अर्थ है पारस्परिक व्यवहार की वे क्रियाएँ, जो व्यक्तियों, समाजों और राष्ट्र को अत्यंत सूक्ष्म सद्भावनापूर्ण साहचर्य और सहकार्य के मधुर बंधनों में बाँधे रखती हैं और एक-दूसरे से सीखते रहने के लिए प्रेरित करती हैं। किसी भी समाज की एकता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए भावनात्मक एकता एक महत्वपूर्ण घटक है। इतिहास इस बात का प्रबल साक्षी है कि जब भी किसी देश, समाज की सभ्यता व संस्कृति का या फिर मानवीय मूल्यों का विघटन हुआ है तो उसके मूल में किसी विशेष भू-भाग से संबधित संदर्भों में भावनात्मक एकता का ही अभाव रहा है।

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुख
भाग भवेत्।।

गहराई से विचार करें तो आधुनिक समाज की साम्यवादी चेतना या समाजवादी भावना हमारी परंपरा में पहले से ही विद्यमान है और यह भावना 'वीणा 1' में विभिन्न रूपों में परिलक्षित हुई है, जैसे —

पृष्ठ संख्या 5 में लता और पेड़ों से एक-दूसरे के साथ प्रेम और सद्भाव की बात सीखने के लिए कहा गया है। इनसे हम और क्या-क्या सीख सकते हैं।

केवल प्रकृति से ही नहीं, अपितु एक-दूसरे व्यक्ति से भी सीखने की बात कही है। सामान्यत: अभिभावक अपने बच्चों में यह भावना भरते हैं कि अपने सहपाठी से आगे रहना, अपने सहपाठी से अधिक अंक लाना। संभवतः वह भारतीय संस्कृति के मूल में निहित संदेश की अनदेखी कर जाते हैं कि प्रतिस्पर्धा हो पर वैमनस्य न हो और एक-दूसरे से भी सीखने की संभावनाएँ बनी रहें।

'वीणा 1' की पृष्ठ संख्या 31 की छठी गतिविधि पर ध्यान दीजिए —

'नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि बया और इस बच्ची के बीच क्या बातचीत हो रही होगी?'

अध्यापक साथियों से यह निवेदन है कि इस गतिविधि को मात्र भाषायी कौशल की गतिविधि न समझें। प्रथम दृष्ट्या ऐसा प्रतीत हो रहा होगा कि यह गतिविधि संवाद कौशल विकसित करने की दृष्टि से सृजित की गई है। परंतु भारतीय ज्ञान परंपरा के दृष्टिकोण से देखें तो यह गतिविधि संकेत करती है कि हमारे आस-पास चर-अचर जो भी वस्तुएँ/प्राणी हैं, हमारा उनसे एक निश्चित संबंध है और उनके भावात्मक अनुराग, प्रेम-सद्भाव और तदानुभूति रखना हमारा धर्म है। 'बया और बच्ची' के बीच संवाद विद्यार्थियों को भावनात्मक एकता के इसी रास्ते की ओर ले जाता है। यह भावनात्मक एकता 'वीणा 1' में विभिन्न रूपों में अवतरित हुई है। कहीं पर प्रकृति के साथ तो कहीं अपने मित्रों के साथ तो कहीं पर सपने देश के समस्त निवासियों के साथ।

उदाहरण के लिए, पृष्ठ संख्या 147 पर 'हम अनेक किंतु एक' कविता का गायन, पृष्ठ संख्या 151 पर 'पढ़िए और जानिए' के अंतर्गत भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों में रहने वाले व्यक्तियों का परिचय और पृष्ठ संख्या 154 पर दी गई कविता 'हिंद देश के निवासी' ये सभी मूलतः भावनात्मक एकता, अखंडता और सद्भाव के गुणधर्म को हमारी रक्तवाहनियों में संचरित करने में सक्षम हैं।

श्रम की गरिमा — प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के मूल में है 'शारीरिक श्रम का महत्व'। गुरुकुल शिक्षा पद्धति इस बात की प्रबल और प्रत्यक्ष साक्षी है कि विद्यार्जन और बहुआयामी विकास (शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक) के लिए केवल पुस्तक पोथियों का पठन-पाठन ही नहीं, अपितु शारीरिक श्रम भी अनिवार्य है। इसीलिए शिक्षार्जन हेतु गुरुकुल निवासी हर प्रकार का शारीरिक श्रम करते थे। 'वीणा 1' मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के महत्वपूर्ण घटक शारीरिक श्रम की गरिमा व महत्व को स्वीकारती है और बहुत ही नन्हे से जीव चींटी के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेम का महत्व समझाती है। पृष्ठ संख्या 09 पर दी गई कविता तुकबंदी करना, लय और ताल की पहचान करना जैसे भाषायी कौशलों का तो विकास करने में सक्षम है ही, साथ ही श्रम के प्रति आदर एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में भी सक्षम है। श्रम विहीन मानव जीवन शिथिल एवं निष्क्रिय हो जाता है। वैज्ञानिक उन्नति भी वैज्ञानियों के बौद्धिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार के श्रम के कारण संभव हो पाई है। समाज की आर्थिक प्रगति के संकेतक हैं — भवन, बाँध, सड़क आदि का निर्माण। यह बिना शारीरिक श्रम के संभव नहीं। इस बात का संकेत विद्यार्थियों को उनकी प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही मिल जाए, तो श्रेयस्कर है जिससे कि वे नियतिवाद से जुड़े दृष्टिकोण को आलोचनात्मक रूप से प्रश्न करना सीखें। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में है —

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै:।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृग॥

'चींटी' कविता के साथ-साथ पृष्ठ संख्या 25 पर दी गई कविता 'बया हमारी चिड़िया रानी!' भी विद्यार्थियों को श्रम के महत्व का पाठ सिखाती है। चींटी और बया दोनों ही बहुत ही छोटे जीव हैं। ये अपनी दिनचर्या में सक्रिय रहकर तरह-तरह का श्रम करते हैं, स्वावलंबन की राह चुनते है, चुनौतियों का सामना करते हुए श्रम में आनंद लेते हैं, 'वीणा 1' यह संदेश बहुत ही सहजता से बच्चों तक पहुँचाती है। इस संदर्भ में पृष्ठ संख्या 58 पर दिया गया प्रश्न —

'शारीरिक श्रम करना क्यों आवश्यक है? क्या आप प्रतिदिन कोई शारीरिक श्रम करते हैं?' एकदम सीधे-सीधे श्रम करने का आनुभविक अनुसंधान भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में है। ऋषि-मुनियों ने जीवन व जगत को लेकर नवीन प्रयोग किए, नए अनुभव प्राप्त किए, तार्किकता के माध्यम से सत्य-असत्य और उपयोग-अनुपयोग की कसौटियों पर कसकर मानव हित में रचनात्मक अभिव्यक्ति दी हैं। शास्त्रार्थ और स्वयं करके देखना ये दोनों क्रियाएँ भारतीय ज्ञान के तार्किक तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक व श्रेष्ठ शोधपरक दृष्टि का परिचायक है। हमारी ज्ञान परंपरा में 'ज्ञान' व्यावहारिक अनुभवों की उपज है। व्यावहारिकता से सैद्धांतिकता का यह क्रम भारतीय

ज्ञान परंपरा की महत्वपूर्ण सिद्धि है। 'वीणा 1' विविध प्रकार से इस 'अनुसंधान दृष्टि' को विद्यार्थियों तक बहुत ही साकर्षक तरीके से पहुँचाती है। उदाहरण के लिए, पृष्ठ संख्या 29 की प्रश्न संख्या 2 पर ध्यान दें — पाठ में बया रानी नदियों से पानी लाती है? वह नदियों के अतिरिक्त कहाँ-कहाँ से पानी लाती होगी? इस प्रश्न के मूल में है कि विद्यार्थी स्वतः प्रयत्न करके जलस्रोतों की जानकारी एकत्रित करें। वे अपने घर के बड़ों से बातचीत करके, आपस में चर्चा करके, पुस्तकालय मैं जाकर पठन सामग्री से पढ़कर, यानी कि विविध तरीकों का उपयोग कर यह जानकारी ढूँढ़ कर लाएँगे। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए अनुसंधान और खोजबीन का इससे बढ़िया उदाहरण और क्या हो सकता है? इसी प्रकार से पृष्ठ संख्या 45 पर 'खोजें जानें' शीर्षक के अंतर्गत विद्यार्थियों को आम के विभिन्न प्रकारों के बारे में खोजबीन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है — 'आपने आम के विभिन्न प्रकार के नाम सुने होंगे, जैसे — दशहरी, सिंदूरी, चौसा आदि, घर के बड़ों से पूछकर कुछ और नाम पता करके लिखिए।'

यह गतिविधि भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े अनेक निहितार्थों को समेटे हुए है, जैसे —

- आनुभविक अनुसंधान और खोजबीन;
- अनुभवी व्यक्तियों से संवाद करना और उनके सिंचित अनुभवों के आधार पर अपने ज्ञान व समझ को समृद्ध करना;
- भारत के कृषि उद्योग की समृद्ध विरासत की जानकारी प्राप्त कर उसकी सराहना करना।

'वीणा 1' स्वतः भी आमों के प्रकारों की सूची दे सकती थी और विद्यार्थियों के कंठस्थ करने के लिए कह सकती थी। इससे विद्यार्थियों की खोज-बीन और जिज्ञासा की प्रवृत्ति कुंद हो सकती है, अतः 'वीणा 1' ने इस प्रकार की कोई चेष्टा नहीं की और 'करके सीखने' की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है।

'जिज्ञासु प्रवृत्ति' का पोषण करने वाले प्रश्नों की शृंखला में एक और बहुत ही सार्थक प्रयास है — पृष्ठ संख्या 77 पर 'पता कीजिए' शीर्षक के अंतर्गत दी गई गतिविधि पर ध्यान दीजिए —

'फूलदेई वसंत ऋतु' (मार्च–अप्रैल) में मनाया जाने वाला त्योहार है। ऐसे ही शरद ऋतु (सितंबर-अक्तूबर) हेमंत ऋतु (नवंबर–दिसंबर) में मनाए जाने वाने त्योहारों की जानकारी खोजिए और लिखिए।' यह गतिविधि खोजबीन, अनुसंधान, आविष्कार, गवेषणा जैसे गुणों को पोषित करती हुई अप्रत्याशित ढंग से एक ध्रुवीयता को नकारने का भाव पैदा करती है और सामाजिक समरसता, प्रकृति के साथ चलने व सामंजस्य बैठाने की प्रवृत्ति का विकास करती है जो हमारी ज्ञान परंपरा के केंद्र में है। स्मृति, धारणा और बोध का संवहन करती हुई 'वीणा 1' ऋग्वेद के 'मंडूक सूक्त' के सिद्धांतों को चरितार्थ करती हुई प्रतीत होती है। मंडूक सूक्त 'तोता रटंत पद्धति' को नकारने की बात कहता है। 'वीणा 1' भी जड़ता पैदा करने वाले प्रश्नों को नकारती है और स्वतंत्र चिंतन-मनन की भरपूर संभावना जुटाती है। आवश्यकतानुसार स्मृति को भी ज्ञान प्राप्ति के मार्ग के रूप में चुनती है, जैसे कि

पृष्ठ संख्या 10 पर दिए गए प्रश्न रेखांकित करते हैं — आपने सबसे छोटा कौन-सा कीट देखा और कहाँ देखा है?

'आपने चींटी के अतिरिक्त और कौन-कौन से श्रम करने वाले जीव देखे हैं?'

'नन्हीं चींटी के बारे में अपना कोई अनुभव बताइए।'

उपर्युक्त प्रकृति के और भी अनेक प्रश्न एवं गतिविधियाँ 'वीणा 1' की सृजनशीलता को रेखांकित करते हैं और भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण घटक स्मृति-धारणा और बोध जैसे तार्किक युक्तियों का निर्वहन करते हैं।

वैज्ञानिक तत्परता का भाव एवं तार्किक चिंतन-शास्त्रार्थ शब्द से सभी पाठक परिचित होंगे। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति में यह ज्ञान सृजन एवं ज्ञान के हस्तांतरण की महत्वपूर्ण पद्धति रही। यह पद्धति 'चुप्पी' की संस्कृति को नकारती है और हर वस्तुस्थिति, परिघटना के पीछे छिपे रहस्य को प्रश्नों के माध्यम से जानने की परंपरा की नींव रखती है। वैज्ञानिक इसे तत्परता के भाव के नाम से भी जानते हैं।

वैज्ञानिक चिंतन एवं तत्परता के मूल में जिज्ञासा, अवलोकन प्रश्न और तर्क करना शामिल है। 'वीणा 1' इस संस्कृति को अपनी गतिविधियों एवं पाठ्यसामग्री के माध्यम से समृद्ध करती है। उदाहरण प्रस्तुत है — पृष्ठ संख्या 135 पर 'आपका अवलोकन और चाँद का आकार' शीर्षक के अंतर्गत दी गई गतिविधियाँ —

- रात्रि को लगभग 10 मिनट के लिए अपने घर के किसी बड़े सदस्य के साथ, पंद्रह दिनों तक आकाश में चाँद को देखिए। अपनी दैनिकी में चाँद के आकार को लेकर अपना अवलोकन लिखिए। अपने अवलोकन के आधार पर चाँद के बढ़ते-घटते आकार का चित्र बनाइए।
- आपने अपने घर के बड़ों या फिर सहपाठियों से 'आमावस्या' और 'पूर्णिमा' के बारे में सुना होगा। ईद के त्योहार को भी चाँद दिखने पर मनाया जाता है। पता लगाइए कि इन दिनों में चाँद का आकार कैसा होता है?

उपर्युक्त दोनों गतिविधियों में 'अवलोकन' को महत्व दिया गया है। ऋषि मुनियों ने जीवन और जगत को लेकर सतत रूप से अवलोकन किया, अवलोकन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर शास्त्रार्थ किए। शास्त्रार्थ की तार्किकता के माध्यम से सत्य-असत्य और उपयोग-अनुप्रयोग की कसौटी पर कसकर समस्त प्राणीजगत के हित में स्वतात्मक अभिव्यिक्ति दी। 'वीणा 1' भी अपने कलेवर, चित्रों और गतिविधियों के संबंध में भारतीय ज्ञान के तार्किक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक दृष्टि की परिचायक है।

निष्कर्ष

भारतीय 'ज्ञान परंपरा' एक विशाल और समृद्ध परंपरा है, जो हजारों वर्षों से विकसित होती आ रही है। इसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़ा हुआ गहन ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव और दार्शनिक दृष्टिकोण समाहित हैं — जैसे, शिक्षा, धर्म, दर्शन,

विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, संगीत, कला, नृत्य, स्थापत्य, कृषि, भाषा और समाजशास्त्र। यह परंपरा न केवल बौद्धिक विकास की पोषक रही है, बल्कि मानवीय चेतना, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, तथा सामाजिक सह-अस्तित्व की भावना को भी सुदृढ़ करती है। मानवीय जीवन के विविध पक्षों, जैसे— पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पोषण एवं आहार, आवास, श्रम की गरिमा, कला एवं संस्कृति, सामुदायिक सेवा और सामाजिक सद्भाव, विज्ञान एवं तकनीकी नवाचार से जुड़ी भारतीय ज्ञान परंपरा, कक्षा 3 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' में अत्यंत सहज, सरस और बाल-सुलभ रूप में प्रस्तुत की गई है। 'वीणा 1' के माध्यम से इन पारंपरिक ज्ञान स्रोतों को आधुनिक संदर्भों से जोड़ा गया है जिससे बच्चों में न केवल भाषिक दक्षता का विकास होता है, बल्कि वे भारतीय जीवन मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत से भी आत्मीयता स्थापित कर पाते हैं। यह प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ. -एस. ई. 2023) के उस उद्देश्य के अनुरूप है जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन पर विशेष बल दिया गया है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. *वीणा — कक्षा 3 के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.